E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 14-07-2025
Accepted: 27-09-2025
Published: 16-10-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 86-89

भारतीय प्रागैतिहासिक चित्र भाषा में सामाजिक निहितार्थ

डॉ. रुचिन वर्मा

सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17608584

Corresponding Author: डॉ. रुचिन वर्मा

सारांश

भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रकला मानव सभ्यता के आरंभिक काल का अमूल्य साक्ष्य है, जो हमारे पूर्वजों की जीवनशैली, धार्मिक भावनाओं, सांस्कृतिक परंपराओं और कलात्मक अभिव्यक्ति का परिचायक है। इन चित्रों का निर्माण उस समय किया गया जब लेखन प्रणाली का विकास नहीं हुआ था, अतः ये चित्र मानव की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बने। भारत में प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण भीमबेटका की गुफाएँ हैं, जो मध्य प्रदेश में स्थित हैं और यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं। इन चित्रों में दैनिक जीवन के दृश्य जैसे शिकार, नृत्य, युद्ध, पशु–पक्षियों की आकृतियाँ, और धार्मिक अनुष्ठानों के प्रतीक स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। चित्रों में प्रयुक्त रंग प्राकृतिक खनिजों, पत्थरों, वनस्पतियों और मिट्टी से प्राप्त किए गए थे, जो आज भी अपनी जीवंतता बनाए हुए हैं। लाल, सफेद, पीला और हरा रंग प्रमुख रूप से प्रयोग किए गए, जो उस समय के पर्यावरणीय संसाधनों पर आधारित थे। प्रागैतिहासिक चित्रकला केवल मनोरंजन या सजावट का साधन नहीं थी, बल्कि यह मानव के सामाजिक और धार्मिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई थी। इन चित्रों से यह स्पष्ट होता है कि उस समय के लोग प्रकृति के प्रति गहरी संवेदना रखते थे और अपने जीवन की घटनाओं को प्रतीकात्मक रूप में अभिव्यक्त करते थे। इस प्रकार, भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रकला न केवल हमारे इतिहास की कलात्मक विरासत का हिस्सा है, बल्कि यह हमारे सांस्कृतिक विकास की निरंतरता का भी प्रतीक है। यह हमें मानव सभ्यता की आरंभिक चेतना और सृजनशीलता की झलक प्रदान करती है, जो आज भी हमारी कलात्मक परंपराओं को प्रेरित करती है।

मूल शब्दः प्रागैतिहासिक चित्रकला, कलात्मक दृष्टिकोण, रूपाकृतियॉं, सृजनात्मकता, सामुदायिक चित्र, प्रतीकात्मकता आदि।

प्रस्तावना

मनुष्य का इतिहास उसकी चेतना, सृजनात्मकता और सामूहिकता की यात्रा का दस्तावेज है। इस क्रम में प्रागैतिहासिक युग मानव सभ्यता का वह चरण है, जब लेखन का विकास नहीं हुआ था, और मानव अपनी अभिव्यक्तियों को चित्रों के माध्यम से प्रकट करता था। भारत समेत विश्व के कई भागों में गुफाओं की दीवारों पर बने प्राचीन चित्र न केवल कलात्मक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे उस समय के सामाजिक जीवन, संबंधों, परंपराओं और सांस्कृतिक संरचना की झलक भी प्रस्तुत करते हैं। चित्रात्मक अभिव्यक्तियों का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना की प्राक मानव का इतिहास। इसी कारण चित्रभाषा को प्राचीन मानवीय उत्पत्ति कहा जाता है जिसे मानव द्वारा सर्वकालिक भावाभिव्यक्ति के साधन के रूप में सदैव ही प्रयोग किया गया है। प्राचीन मानव सभ्यताओं ने सदैव अपने जीवन को सुखमय व समृद्ध बनाने की चेष्टाएं की जिसके फल स्वरुप उन्होंने विभिन्न भावात्मक अभिव्यक्तियों के लिए ऐसी कृतियों का सृजन आरंभ किया जो उनके जीवन को अधिक सुचारू बना सकें। इसी श्रृंखला में उनके द्वारा प्रस्तर यंत्रों व तूलिका के माध्यम से टेढ़ी–मेढ़ी रेखाओं से सृजित विभिन्न आकृतियों एवं प्रतीक चिन्ह गुहाओं–कंदराओं व चट्टानों की भित्तियों पर अंकित किए गए। इन रूपाकृतियों में प्राचीन मानव की भावनात्मक अभिव्यक्तियां व उनके संघर्षमय जीवन की संजीव झलकियां आज भी प्रागैतिहासिक कला केंद्रो में दर्शनार्थ सुलभ हैं। आदिकाल से लेकर आज तक मानव रेखा, रंग व आकारों के माध्यम से आत्म अभिव्यक्तियों को अनवरत प्रस्तुत करता चला आ रहा है यही आत्म अभिव्यक्तियां आदिकाल से वर्तमान तक एक चित्र भाषा के रूप में चरणबद्ध विकास की कहानी कहती चली आ रही हैं।

भाषाई विकास से पूर्व प्रागैतिहासिक मानव जंगलों में निवास करता था वह स्वयं को जंगली पशुओं इत्यादि से सुरक्षित रखने के लिए पाषाण निर्मित औजारों का उपयोग करता था। सुरक्षा के आशय से ही उसने गुफाओं में शरण ली तथा पशु चर्बी व लकड़ियों को जलाकर उसने अंधेरी गुफाओं को प्रकाशित किया। ऐसे वातावरण में उसने अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को एक चित्र भाषा के रूप में अनगढ़ कठोर शिलाओं पर उकेरा। इस प्रकार के चित्र चट्टानों की दीवारों, गुफाओं की छतों, फर्श आदि पर अंकित किए गए। इन चित्रों में प्रयुक्त रंगों में विशेष रूप से लाल (गेरू या हिरौंजी), काला (काजल या कोयला) तथा सफेद (खड़िया) आदि का प्रयोग देखने को मिलता है। मानव द्वारा इन

रंगों को पशु चर्बी के साथ घोलकर प्रयुक्त किया गया जिससे इन चित्रों के रंग व रेखाएं हजारों वर्षों तक वातावरणीय प्रभावों से सुरक्षित रहते हुए स्थाई बने रहे।

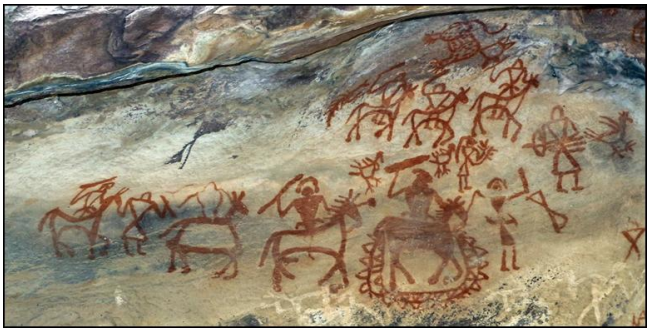

भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रागैतिहासिक कलावशेष आज भी देखने को मिलते हैं इन चित्रों में मानव के दैनिक जीवन की घटनाओं जैसे आखेट, उत्सव, प्राकृतिक शक्तियों की उपासना, आमोद–प्रमोद आदि विभिन्न विषयों का अंकन बहुलता में देखने को मिलता है। प्राप्त चित्रों से यह स्पष्ट होता है कि आदिमानव जिस वातावरण में रहा उसी की झलक चित्रात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत की। आखेट योजना, शिकार के दृश्य, परस्पर युद्धों के चित्र, शिकार विजय के पश्चात उत्सव, दैनिक कार्यों के चित्र, धार्मिक व सामुदायिक चित्र इत्यादि तत्कालीन मानव की कला के प्रमुख विषय रहे। प्रागैतिहासिक मानव को समय–समय पर प्राकृतिक आपदाओं का भी सामना करना पड़ता था जिससे वह इन शक्तियों से अत्यंत भयभीत भी रहता था, इसी कारण प्रागैतिहासिक मानव ने इनसे बचाव के लिए इन शक्तियों को प्रतीको व टोना–टोटका आदि के माध्यम से पूजना भी आरंभ कर दिया था। मानव ने इस समय अपनी कला में प्रतीको के माध्यम से लौकिक–अलौकिक, अदृश्य व दृश्य भावों को व्यक्त करना भी सीख लिया था।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रागैतिहासिक मानव के विकास क्रम को तीन प्रमुख भागों– पूर्व पाषाण, मध्य पाषाण व उत्तर पाषाण युग में विभाजित किया गया है। पूर्व पाषाण युग का मानव दक्षिण भारत के मद्रास में कुडापा व अंगोला नामक क्षेत्र के आसपास तक सीमित रहा किंतु उत्तर पाषाण कालीन मानव धीरे–धीरे लगभग पूरे भारत में फैल गया। उत्तर पाषाण कालीन मानव विशेषतयः कर्नाटक के बेलारी, वायनाड एडकल, बुंदेलखंड, मिर्जापुर, होशंगाबाद, सिंघनपुर, हरनी हरन, पंचमढ़ी आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। भारत में प्रागैतिहासिक चित्रों के खोजकर्ता आर्चीवाल कार्लाइल द्वारा सन 1867– 68 में शिला चित्रों की खोज की गई। इसके बाद 1880 में काकबर्न व कार्लाइल ने मिलकर मिर्जापुर, 1910 में डब्ल्यू एंडरसन ने सिंघनपुर व 1932 में जी आर हंटर ने पंचमढ़ी के शिला चित्रों की खोज करके उनके संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रकाशित की।

प्रागैतिहासिक मानव द्वारा इन स्थानों पर चित्रण मात्र गुफाओं में ही नहीं बल्कि खुले वातावरण में स्थित शिलाओं पर भी किया गया है। कहीं–कहीं शिलाश्रयों पर अलग–अलग समय में एक से अधिक परतों में भी बनाए गए चित्र प्राप्त हुए हैं। भारत में सर्वाधिक शिला चित्रो की प्राप्ति मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में हुई है। मध्य प्रदेश में होशंगाबाद, रायगढ़, सिंघनपुर, मंदसौर पंचमढ़ी आदि स्थानों में बड़ी संख्या में शिला चित्रों की प्राप्ति होती है। रायसेन जिले में स्थित भीमबेटका नामक स्थान पर चित्रित शिला चित्रों को यूनेस्को द्वारा विश्व सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी मान्यता प्रदान की गई है। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में मडहरिया, भल्डारिया, विजयगढ़ लखनिया, सोरहो घाट, घोड़मंगर आदि स्थानों से बड़ी संख्या में शिला चित्र प्राप्त हुए हैं।

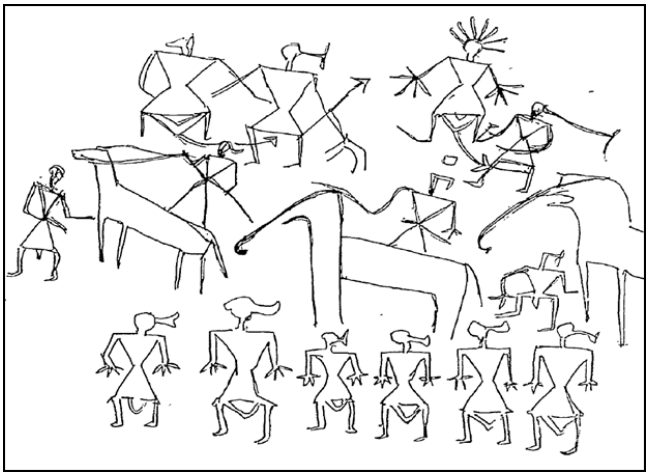

मध्य प्रदेश की रायगढ़ रियासत में स्थित सिंघनपुर नामक ग्राम के निकट लगभग चार दर्जन से अधिक शैलाश्रयों पर चित्र प्राप्त हुए हैं। मध्य प्रदेश के ही पंचमढ़ी नामक क्षेत्र में फैले विभिन्न स्थलों पर गुहावासी मानव की चित्रकला के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं, यहां के शिला चित्रों में आखेट चित्रों के अतिरिक्त सशस्त्र युद्ध दृश्य, नर्तन–वादन, गायों को चराते चरवाहे, शहद एकत्र करते हुए मानवों का दल तथा संगीत का आनंद लेते हुए युगल आदि का चित्रण प्राप्त होता है जो कि तत्कालीन मानव के सामाजिक ताने–बाने की सुंदर झलक प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रदेश में भोपाल के निकट भीमबेटका नामक पहाड़ी पर सैकड़ो प्राचीन गुफाएं व शिलाश्रय प्राप्त हैं, यहां से आखेटक, कृषक, ग्वाले, जंगली पशुओं के चित्र सहित ग्राम्य जीवन पर आधारित चित्रण देखने को मिलता है। मध्य प्रदेश के होशंगाबाद में नर्मदा नदी के किनारे कुछ दूरी पर स्थित आजमगढ़ नामक पहाड़ी पर शिलाश्रय प्राप्त हैं जिनकी दीवारों पर जंगली महिष, जिराफ समूह के चित्र, हाथी, सॉभर, घोड़े पर सवार अस्त्र धारी आदि के चित्रों को छेपांकन पद्धति में दर्शाया गया है।

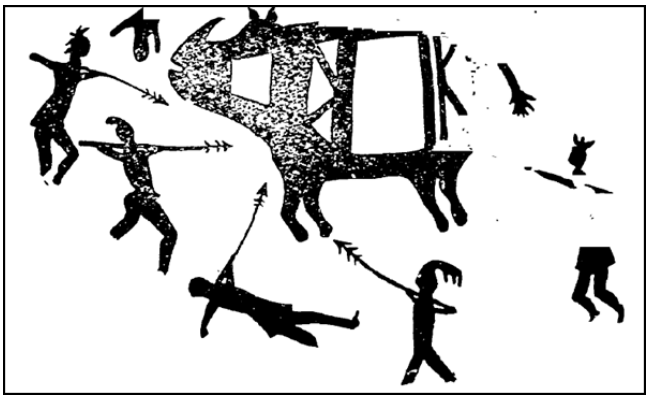

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर क्षेत्र में स्थित गुफाओं के चित्रों में स्वाभाविकता एवं यथार्थता के दर्शन होते हैं। यहां के भल्डरिया नामक केंद्र से पशुओं के शिकार संबंधी चित्र प्राप्त हुए हैं। लिखनियां केंद्र से पशु आखेट, युद्धों के दृश्य, नृत्य–वादन में मस्त मानव समूहों का अंकन भी देखने को मिलता है। इसी क्षेत्र में विजयगढ़ दुर्ग के समीप स्थित स्थल हरनी हरन में "गैंडे का शिकार करते हुए शिकारी दल" का प्रभावशाली अंकन प्राप्त हुआ है, इस चित्र में छः व्यक्तियों को नुकीले भालों के साथ गैंडे पर

प्रहार करते दिखाया गया है एवं चित्र में गैंडे के सींग के प्रहार से एक आखेटक को हवा में ऊपर उछली हुई मुद्रा में दर्शाया गया है जो कि स्वयं में अद्वितीय है। इस क्षेत्र के अधिकांश चित्रों में गेरू, हिरौंजी व कोयले के रंगों का प्रयोग हुआ दिखाई पड़ता है।

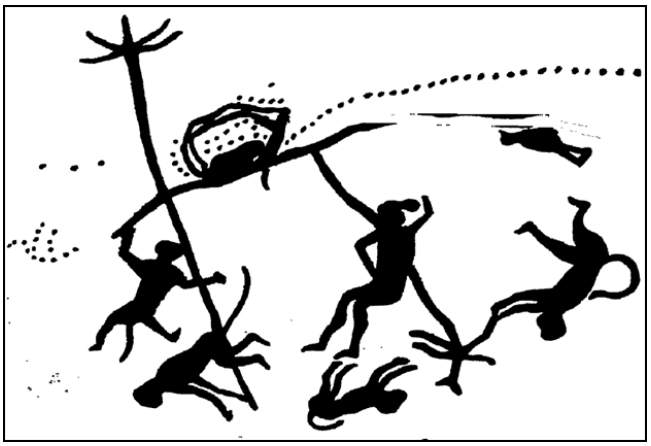

प्रागैतिहासिक मानव द्वारा चित्रण हेतु प्रमुख रूप से पशुओं के शिकार एवं दैनिक क्रियाकलाप संबंधी घटनाओं को चुना गया क्योंकि यह कार्य ही उसके दैनिक जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों में से थे। जंगली पशुओं के रूप में प्राय महिष, गैंडा, हाथी, सॉभर, बारहसिंगा, जंगली सूअर आदि के चित्र शिलाश्रयों की दीवारों पर देखने को मिलते हैं। मानव ने इन्हीं पशुओं का आखेट किया तथा शिकार विजय के विभिन्न क्षणों व अनुभूतियों को चित्रों के रूप में अंकित कर दिया। समय के साथ धीरे–धीरे दैनिक जीवन संबंधी व अन्य विभिन्न क्रियाकलापों का अंकन भी होने लगा था। विभिन्न चित्रों में पुरुषों को अधिकतर शिकार व युद्ध करते हुए दिखाया गया है, स्त्रियों को घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल या सामूहिक नृत्य में भाग लेते हुए दिखाया गया है। यह संकेत करता है कि उस समय लिंग आधारित कार्य विभाजन की शुरुआत हो चुकी थी व स्त्री और पुरुष दोनों ही सामाजिक व्यवस्था के अलग–अलग परंतु समान रूप से महत्वपूर्ण स्तंभ थे। कुछ चित्रों में माता, पिता और बच्चों को साथ में दिखाया गया है, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पारिवारिक इकाई की अवधारणा मौजूद थी। गुफा चित्रों में अधिक व्यक्ति मिलकर एक वृत्त बनाकर नृत्य करते दिखाए गए हैं। अन्य चित्रों में ढोल जैसा वाद्य बजाते मानव चित्रित हैं, यह इंगित करता है कि सामूहिक मनोरंजन और सामाजिक मेल–जोल के अवसर नियमित होते थे।

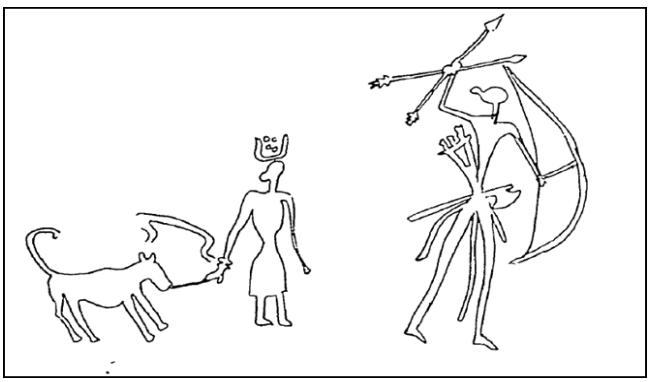

पशु पूजा व प्रकृति पूजा से संबंधित चित्र भी मिलते हैं, जिसमें गाय, हिरण या सूर्य जैसी आकृतियों की पूजा होती प्रतीत होती है। चित्रों में उत्सव मनाते समूह, नाचते–गाते लोग, वाद्य यंत्रों के प्रयोग की छवियाँ भी सामाजिकता के उत्सवमूलक पक्ष को उजागर करती हैं। यह सामाजिकता की धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से संगठित भावना को प्रकट करता है, जहाँ मान्यताओं और विश्वासों ने लोगों को एक सूत्र में बांधा। कई चित्रों में मानव आकृतियों के वस्त्र, शरीर की सजावट, सिर पर वस्त्र या पंख, चित्रांकित आकृतियों की भिन्नता सामाजिक पहचान के संकेत हो सकते हैं। इससे यह संभावना बनती है कि विभिन्न वर्गों या समूहों की पहचान बनी हुई थी। कुछ चित्रों में कुछ व्यक्तियों को हथियारों से सुसज्जित दिखाया गया है, जो संभवतः नेता, योद्धा या विशिष्ट जन हो सकते हैं।

आदिम कला में प्रतीकात्मकता अत्यंत व्यापक स्तर पर दिखाई देती है चित्रों में वृत्त, आयत, त्रिभुज, सूर्य, स्वास्तिक, चक्र, षट्कोण आदि विभिन्न ज्यामितीय अलंकरणों का प्रचलन भी देखने को मिलता है। चित्रों में प्रागैतिहासिक मानव जीवन के इतिहास की झलक दिखाई पड़ती है, यद्यपि यह चित्र असंयत व कठोर हैं किंतु फिर भी इनमें जीवंतता का आभास होता है। अधिकांश चित्रों को रेखाओं द्वारा अंकित किया गया है साथ ही कुछ में छेपांकन (स्टैंसिल) पद्धति का प्रयोग भी दिखाई पड़ता है।

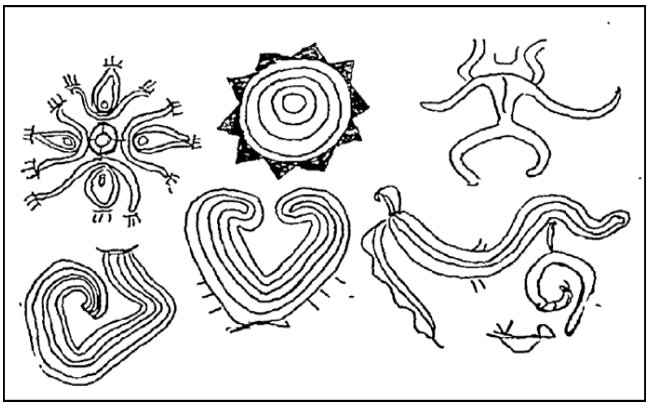

प्रागैतिहासिक चित्रों में तत्कालीन सामाजिक संस्कृति के स्पष्ट दर्शन होते हैं अनेक शिकार चित्रों में मानव को समूह में आखेट करते दिखाया गया है जोकि आदिमानव की विकसित आखेटक संस्कृति के स्वरूप को प्रस्तुत करता है। चित्रों में विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय आकारों व रेखाओं का प्रयोग प्राकृतिक शक्तियों में विश्वास को व्यक्त करने के लिए होता था। ग्राम्य जीवन संबंधी प्राप्त चित्रों में सामाजिक–संस्कृति एवं उल्लास पूर्ण क्षणों का अंकन हुआ हैं जिनमें वाद्य यंत्रों को बजाते हुए व नर्तन वादन आदि के चित्रों में सामाजिक सौहार्द के दर्शन होते हैं।

इन चित्रों के माध्यम से हमें न केवल मानव की कलात्मक अभिव्यक्ति का ज्ञान होता है, बल्कि यह भी समझ में आता है कि समाज की नींव कितनी पुरानी और गहरी है। प्रागैतिहासिक चित्र यह सिद्ध करते हैं कि मानव समाज ने सामाजिकता, सह–अस्तित्व, सहयोग और साझा संस्कृति के सिद्धांतों को बहुत पहले ही आत्मसात कर लिया था। प्रागैतिहासिक चित्र केवल दीवारों पर बने रंगीन रेखाचित्र नहीं हैं, वे उस युग की सामाजिक आत्मा के दस्तावेज हैं। वे हमें बताते हैं कि सामाजिकता कोई आधुनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह मानव प्रकृति की मूल प्रवृत्ति है। इन चित्रों के माध्यम से हमें यह सिखने को मिलता है कि भाषा के अभाव में भी मनुष्य ने चित्रों के माध्यम से एक दूसरे से संवाद किया, भावनाओं को साझा किया और सामाजिक संरचना को विकसित किया। आज जब आधुनिक समाज एक बार फिर एकाकीपन, सामाजिक बिखराव

और आत्मकेन्द्रितता की ओर जा रहा है, तब प्रागैतिहासिक काल के ये चित्र हमें सामूहिकता, सहयोग और सामाजिकता के उन मूल मूल्यों की याद दिलाते हैं।

संदर्भ

1. गुप्त, जगदीश, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2. अग्रवाल, वासुदेव शरण, कला और संस्कृति, साहित्य भवन प्रा0 लि0, इलाहाबाद
3. श्रीवास्तव डॉ0 लक्ष्मी, कला विचार, विभा प्रकाशन–50, चाहचन्द इलाहाबाद
4. गैरोला वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन प्रा0 लि0, इलाहाबाद
5. प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
6. वर्मा, अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली
7. अग्रवाल, आर ए, कला विलास : भारतीय चित्रकला का विवेचन, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
8. अग्रवाल, जी के, कला और कलम, संजय पब्लिकेशन, आगरा

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.